अन्दर के आर्त्तनाद को आकार देती कविताएं

जनकराज पारीक

कविता किस प्रकार जिन्दगी की ठोस हकीकतों,चाहतों,मजबूरियों और दुशवारियों के साथ बगलगीर होकर संवाद रचाती है,इसकी गहरी समझ जब कवि को हो और तिक्त संवेदनाओं से आपलावित उसकी लेखनी कुछ लिखने को विवश हो जाए तो 'कच्चे कच्च दे कंगन 'जैसा सशक्त काव्य संकलन प्रस्फुटित होता है।

पडछावियां दे मगरे मगर' तथा 'चुप्प तों मगरों' के बाद इस तीसरे कविता संग्रह तक आते आते कवि गुरमीत बराड की भावभूमि और अधिक विस्तृत तथा अन्तदृष्टि और अधिक पैनी हुई है। विचारशीलता और संवेदनाओं को मस्तिष्क की दो भिन्न भंगिमाएं मानते हुए वह चिंतन के प्रज्ञात्मक धरातल पर उतरा है।

'कायनाती चुप्प नाल
बिरती जोडदा हां
करदा हां कोशिश
अमूझ नूं बुझण दी
बे-सियाण नाल
सियाणु होण दी'

(मवखण्डन की आरती, पृष्ठ 32)

इसी अन्तर्यात्रा से उत्प्रेरित वह याचना करता है –

'मन कुसुध्दा चानण लोचे
बाबिओ! इक गेडा
अन्दर दी मारो'

(गुरूघर गया सां, पृष्ठ 23)

अन्दर के अंधकार से ज्योतित हो उठने पर अनहद नाद संगीत का आनन्द लेते हुए वह कहता है–

'एह केहा
गीत नी अडीए
मैनूं आप नूं
सुणदा है
किसे होर नूं नाहीं'

(अनहद नाद, पृष्ठ 47)

अपनी संवेदना और शिल्प दोनो स्तरों पर यह एक अप्रतिम कविता है।
ऐसा नहीं है कि कवि अन्तर्मुखी ही रहा है। वक्त की विसंगतियों,विषमताओं और विद्रूपताओं पर भी वह बराबर दृष्टि रखे हुए है। निजी हितों और निहित स्वार्थों के फलितार्थ ने किस प्रकार आदमी को आदमी से बेगाना कर दिया है,बहुत तीखे कोण से चित्रांकित करता है–

'सज्जा हत्थ ही
खब्बे नूं पुछदा है
मैं पछाणिया नहीं
तूं कौण है माई....'

(पछाण, पृष्ठ 40)

कवि ने इस क्रूर अवस्था में कराह रहे मनुज का आर्त्तनाद सुना ही नहीं अपितु उसे उबारने के लिये प्रेरणा और दिशा निर्देश भी दिये हैं,वह आशावादी है,गन्तव्य तक पहुंचने हेतु कटिबध्द भी–

'दोवें अक्खां 'च
दो सूरज लै के जागीं
पिंडा तां तेरा झुलसेगा
पर तूं तुरिया चल'

(तूं तुरिया चल, पृष्ठ 24)

अधिकांश कविताओं में गुरमीत अपने अन्तर्द्वन्द्व के एक ऐसे जटिल फन्तासीपूर्ण नक्शे में घिरे हैं जिसके पार रास्ता पाने की चिन्ता तो उन्हें है लेकिन यह कैसे मुमकिन होगा,लगता है इस बाबत वे अभी असमंजस की स्थिति में हैं–

'जंग जारी है
पतझडां दी
बहारां नाल
रातां दी
दोपहिरां नाल
चिडीआं दी
बाजां नाल
ते मेरी
मेरे नाल'

(जंग जारी है,पृष्ठ 45)

या यह–

'सेक विहूणा
मैं
संत सी कि सिपाही
पछाण नहीं सकिया
की सी एह
युध्द कि बुध्द'

(मरजीवडे दे सिवे ते,पृष्ठ 43)

यद्यपि ऐसी कविताओं में कवि एक विक्षुब्ध मानसिकता का शिकार है। वह उससे उबरने के लिये आत्मालाप की स्थितियों से गुजरता भी है–

'अदाकारी है
बस अदाकारी
पल-पल
हर-पल
एह जिन्दगी
निभाउंदा रह
तेरा किरदार'

(करता पुरख,पृष्ठ 19)

आत्म मंथन के यही क्षण उसे आने वाले समय के प्रति आश्वस्त करते हैं और कवि हृदय को एक सुखद विशवास से भर देते हैं–

'लगदै
हुण मौसम बदलेगा
रूतां नूं
बूर आया है
तां ही तां
जिन्दगी ते
नूर आया है'

(हुण मौसम बदलेगा, पृष्ठ 19)

' कच्चे कच्च दे कंगन ' में जीवन के विविध रंगों को एक कविता–कैनवास पर एक चित्रकार के नजरिये से सजाने का सतुत्य प्रयास किया है गुरमीत ने।